दिनांक - 15/02/2024
गुरुवार

अध्ययन सामग्री
बी०ए० III & I (हिन्दी)

डॉ० बजरंग प्रताप केसरी
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

'रीति' की परिभाषा एवं सोदाहरण भेदों की व्याख्या

"रीति"

रीति का शब्दार्थ है शैली पद्धति, मार्ग, पंथ प्रणाली आदि। वस्तुतः विशिष्ट कार्य (क्रिया) पद्धति को रीति कहते हैं। संस्कृत-साहित्य में रीति को काव्यात्मा के रूप में स्वीकार किया गया है-

"रीति आत्मा काव्यस्य" - वामन

वामन ने रीति की परिभाषा इस प्रकार की है- 'विशिष्टा पद रचना रीति' अर्थात विशिष्ट पद रचना रीति है। यह विशिष्टता के गुणों पर आश्रित है। इस प्रकार रीति गुणों से सम्बन्धित है। रीति का दूसरा सम्बन्ध पद-रचना से है जो समास पर निर्भर है। अतः कुछ आचार्यों ने समासहीनता, स्वल्प समासता, दीर्घ-समासता के रूप में भी रीति को देखा है। भामह और दण्डी ने रीति का वेशों से सम्बन्धित रूप में वर्णन किया है। कुन्तक ने रीति को मार्ग कहा है जिसका आधार देश नहीं, वरन् कवि स्वभाव है। विश्वनाथ ने इसे रस का उपकार करने वाली (उपकुर्वीरणादीनाम) कहकर व्यक्त किया है। उन्होंने इसे शैली के रूप में ग्रहण किया है जिसका आधार वर्ण-संघटना और समास है।

... का सारांश प्रस्तुत किया जाय तो रीतियाँ मुख्यतः तीन ही कही जा सकती हैं — वैदर्भी, गौड़ी और पांचाली। इन तीनों रीतियों का आधार क्रमशः माधुर्य, ओज और प्रसाद गुण हैं। उक्त रीतियों के अतिरिक्त राजशेखर ने तीन अन्य रीतियों का भी उल्लेख किया है जिनके नाम- मागधी, मैथिली और वत्सगोमी हैं। किन्तु इन रीतियों को साहित्य-मर्मज्ञों के बीच विशेष प्रतिष्ठा न मिल सकी। अतः काव्यमर्मज्ञों के बीच तीन रीतियाँ - वैदर्भी, गौड़ी और पांचाली ही सर्वमान्य हैं।

(1) वैदर्भी रीति :→ विदर्भ देश से सम्बन्धित होने के कारण इसे वैदर्भी कहा गया है। यह रीति काव्य की सर्वोत्तम रीति मानी गयी है। दण्डी वैदर्भी रीति को श्लेष प्रसादादि दस गुणों से युक्त मानते हैं। वामन ने भी इसे समग्र गुणों से युक्त माना है, परन्तु साथ ही वे इसे वाणी के स्वरों के समान मधुर और विलक्षण कांति से युक्त माना है। वैदर्भी रीति की विलक्षण आभा है। रुद्रट और राजशेखर वैदर्भी को समास रहित शैली के रूप में ग्रहण करते हैं। रुद्रट के अनुसार यह सुकुमार और कोमल गुणों से युक्त होने के कारण शृंगार, करुण आदि रसों के लिये उपयुक्त है। साहित्य दर्पण में इसकी परिभाषा इस प्रकार दी गई है- "माधुर्य व्यंजकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते।"

अर्थात् माधुर्य गुण की व्यंजना करने वाले वर्णों द्वारा वृत्तिहीन (समास रहित) या अल्पवृत्ति वाली रचना वैदर्भी है। गुप्त जी की इन पंक्तियों में वैदर्भी रीति का सुन्दर सामंजस्य हुआ है —

निरख सखी ये खंजन आये।
फेरे उन मेरे रंजन ने इधर नयन मन भाये॥

(२) गौड़ी रीति :→ अत्यन्त ओजपूर्ण रचना को गौड़ी रीति के अन्तर्गत माना गया है। दंडी के अनुसार दस गुणों का समावेश इसमें नहीं होता है। वामन ने इसे ओज कान्तिमयी शैली में ग्रहण किया है जिसमें उग्र पदों और समास की बहुलता रहती है। माधुर्य और सुकुमारता का इसमें अभाव रहता है। रुद्रट ने इसे दीर्घ समास वाली रीति माना है जो कि रौद्र, भयानक, वीर आदि उग्र रसों की अभिव्यंजना के लिये उपयुक्त होती है। विश्वनाथ के अनुसार इसकी परिभाषा इस प्रकार है — " ओजः प्रकाशकैर्वर्णै-बन्ध आडम्बरः पुनः समास बहुला गौड़ी ।"

इस प्रकार ओज गुण प्रकाशक वर्णों से युक्त उद्भट रचना जिसमें समास और क्लिष्टता पूर्ण पदों का अधिक प्रयोग होता है, गौड़ी रीति है। 'दिनकर' की इन पंक्तियों में समास हीनता होने पर भी गौड़ी रीति है —

" शूर धर्म है अभय दहकते अंगारों पर चलना
× × × × × ×
दाहक शक्ति समेट किसी का नहीं स्पर्श भी सहना।"

(३) पांचाली रीति :— इस रीति का उल्लेख सर्वप्रथम वामन ने ही किया। यह रीति माधुर्य और सुकुमारता से सम्पन्न होती है और अगाढ़ित, भावशिथिल, छायायुक्त (कान्ति रहित) मधुर और सुकुमार गुणों से युक्त होती है। वामन के अनुसार इसकी परिभाषा इस प्रकार दी गई है —

" अश्लिष्टश्लथ भावा तां पूरणच्छाया च्छायाश्रितम्
मधुरां सुकुमाराञ्च पांचाली कवयो विदुः।"

रुद्रट और राजशेखर के अनुसार पांचाली लघु समास वाली होती है। यह स्वल्पानुप्रास और उपचार वृत्ति से युक्त मानी गई है। पांचाली रीति का एक उदाहरण देखिए — बीती विभावरी जाग री,